Code: A-H223121-A	**I Semester Exam – 2024-25**	8 x 185
Std.: XII	Sub: Hindi	Marks: 80
Date: 25-10-2024	Roll No.: _____	Time: 3 hrs.

कृतिपत्रिका के लिए सूचनाएँ :

१) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य, विशेष अध्ययन तथा व्यावहारिक हिंदी की कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
२) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही उपयोग कीजिए।
३) सभी आकृतियों में उत्तर पेन से ही लिखना आवश्यक है।
४) व्याकरण विभाग में पूछी गई कृतियों के उत्तरों के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।

विभाग – १ गद्य

प्र.१ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

प्रभात का समय था, आसमान से बरसती हुई प्रकाश की किरणें संसार पर नवीन जीवन की वर्षा कर रही थी। बारह घंटों के लगातार संग्राम के बाद प्रकाश ने अंधेरे पर विजय पाई थी। इस खुशी में फूल झूम रहे थे, पक्षी मीठे गीत गा रहे थे, पेड़ों की शाखाएँ खेलती थीं और पत्ते तालियाँ बजाते थे। चारों तरफ खुशियाँ झूमती थी। चारों तरफ गीत गूँजते थे। इतने में साधुओं की एक मंडली शहर के अंदर दाखिल हुई। उनका खयाल था– मन बड़ा चंचल है। अगर इसे काम न हो, तो इधर–उधर भटकने लगता है और अपने स्वामी को विनाश की खाई में गिराकर नष्ट कर डालता है। इसे भक्ति की जंजीरों से जकड़ देना चाहिए। साधु गाते थे–

सुमर–सुमर भगवान को,
मूरख मत खाली छोड़ इस मन को।

जब संसार को त्याग चुके थे, उन्हें सुर–ताल की क्या परवाह थी। कोई ऊँचे स्वर में गाता था, कोई मुँह में गुनगुनाता था। और लोग क्या कहते हैं, इन्हें इसकी जरा भी चिंता न थी। ये अपने राग में मगन थे कि सिपाहियों ने आकर घेर लिया और हथकड़ियाँ लगाकर अकबर बादशाह के दरबार को ले चले।

यह वह समय था जब भारत में अकबर की तूती बोलती थी और उसके मशहूर रागी तानसेन ने यह कानून बनवा दिया था कि जो आदमी रागविद्या में उसकी बराबरी न कर सके, वह आगरे की सीमा में गीत न गाए और जो गाए, उसे मौत की सजा दी जाए। बेचारे बनवासी साधुओं को पता नहीं था परंतु अज्ञान भी अपराध है । मुकदमा दरबार में पेश हुआ। तानसेन ने रागविद्या के कुछ प्रश्न किए। साधु उत्तर में मुँह ताकने लगे। अकबर के होंठ हिले और सभी साधु तानसेन की दया पर छोड़ दिए गए।

दया निर्बल थी, वह इतना भार सहन न कर सकी। मृत्युदंड की आज्ञा हुई। केवल एक दस वर्ष का बच्चा छोड़ा गया – बच्चा है, इसका दोष नहीं। यदि है भी तो क्षमा के योग्य है। बच्चा रोता हुआ आगरे के बाजारों से निकला और जंगल में जाकर अपनी कुटिया में रोने–तड़पने लगा।

१) संजाल पूर्ण कीजिए। 2

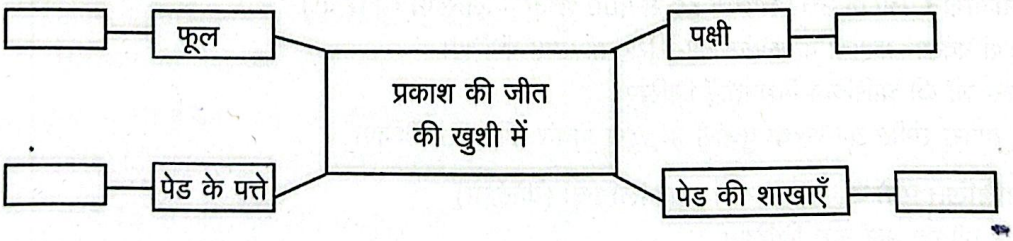

२) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए। 2

१) साधु– २) स्वामी – ३) बादशाह – ४) आदमी–

३) स्वमत लिखिए। **2**

'मुरख मत खाली छोड़ इस मन को' इस कथन का तात्पर्य लिखिए।

आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

बगल में गुप्त जी के बिछौने का बंडल दबाए, दियासलाई के क्षण प्रकाश, क्षीण अंधकार में तंग सीढ़ियों का मार्ग दिखाते हुए निराला जी हमें उस कक्ष में ले गए जो उनकी कठोर साहित्य साधना का मूक साक्षी रहा है।

आले पर कपड़े की आधी जली बत्ती से भरा पर तेल से खाली मिट्टी का दीया मानो अपने नाम की सार्थकता के लिए जल उठने का प्रयास कर रहा था।

वह आलोकरहित, सुख-सुविधाशून्य घर, गृहस्वामी के विशाल आकार और उससे भी विशालतर आत्मीयता से भरा हुआ था। अपने संबंध में बेसुध निराला जी अपने अतिथि की सुविधा के लिए सतर्क प्रहरी हैं। अतिथि की सुविधा का विचार कर वे नया घड़ा खरीदकर गंगाजल ले आए और धोती-चादर जो कुछ घर में मिल सका; सब तख्त पर बिछाकर उन्हें प्रतिष्ठित किया।

तारों की छाया में उन दोनों मर्यादावादी और विद्रोही महाकवियों ने क्या कहा-सुना, यह मुझे ज्ञात नहीं पर सवेरे गुप्त जी को ट्रेन में बैठाकर वे मुझे उनके सुख शयन का समाचार देना न भूले।

ऐसे अवसरों की कमी नहीं जब वे अकस्मात पहुँचकर कहने लगे-मेरे इक्के पर कुछ लकड़ियों, थोड़ा घी आदि रखवा दो। अतिथि आए हैं, घर में सामान नहीं है।

उनके अतिथि यहाँ भोजन करने आ जायें, सुनकर उनकी दृष्टि में बालकों जैसा विस्मय छलक आता है। जो अपना घर समझकर आए हैं, उनसे यह कैसे कहा जावे कि उन्हें भोजन के लिए दूसरे घर जाना होगा। भोजन बनाने से लेकर जूठे बर्तन माँजने तक का काम वे अपने अतिथि देवता के लिए सहर्ष करते हैं। आतिथ्य की दृष्टि से निराला जी में वही पुरातन संस्कार है, जो इस देश के ग्रामीण किसान में मिलता है।

१) उत्तर लिखिए। **2**

i) मिट्टी के दीए की विशेषताएँ

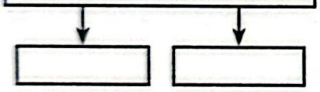

ii) निराला जी की घर की विशेषताएँ

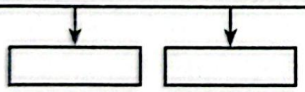

२) निम्नलिखित शब्दों को उचित प्रत्यय लगाकर नये शब्दों बनाइए। **2**

१) साहित्य - _____ २) घर - _____ ३) अपना - _____ ४) देश - _____

३) स्वमत लिखिए। **2**

'अतिथि देवो भव हमारे पुरातन संस्कार है', इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग ८० से १०० शब्दों में लिखिए। (कोई दो) **6**

१) 'आदर्श बदला' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

२) निराला जी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

३) 'बैजू बावरा संगीत का सच्चा पुजारी है', इस विचार को स्पष्ट कीजिए।

ई) निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए। (कोई दो) **2**

१) सुदर्शन जी का मूल नाम लिखिए।

२) हिंदी के कुछ आलोचकों द्वारा महादेवी वर्मा को दी गई उपाधि लिखिए ।

३) 'निराला' जी का मूल नाम लिखिए।

४) सुदर्शन ने इस लेखक की लेखन परंपरा को आगे बढ़ाया है।

विभाग २ – पद्य

प्र.२ अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढकर सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

तुमने विश्वास दिया है मुझको,
मन का उच्छ्वास दिया है मुझको ।
मैं इसे भूमि पर सँभालूँगा,
तुमने आकाश दिया है मुझको ।
सूत्र यह तोड़ नहीं सकते हैं,
तोड़कर जोड़ नहीं सकते हैं।
व्योम में जाएँ, कहीं भी उड़ जाएँ,
भूमि को छोड़ नहीं सकते हैं।
सत्य है, राह में अंधेरा है,
रोक देने के लिए घेरा है।
काम भी और तुम करोगे क्या,
बढ़ चलो, सामने अंधेरा है।

१) कृति पूर्ण कीजिए । 2

१) मुझको दिया है → [ ] [ ]

२) यह तोड़ नहीं सकते हैं। / यह छोड़ नहीं सकते हैं → [ ] [ ]

२) निम्नलिखित शब्दों के लिए पद्यांश में आए हुए विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए । 2

१) अविश्वास – [ ]
२) जोड़ – [ ]
३) असत्य – [ ]
४) उजाला – [ ]

३) 'आत्मविश्वास ही मनुष्य की सफलता की कुँजी है' इस कथन के बारे में अपने विचार ४० से ५० शब्दों में लिखिए । 2

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढकर दी गई सूचनाओके अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात ।
ज्यों खरचै त्यौं–यौं बढ़ै, बिन खरचे घटि जात ।।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत–अहेत ।
जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत ।।

अपनी पहुँच बिचारि कै, करतब करिए दौर ।
तेते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सौर ।।

फेर न हवें हैं कपट सों, जो कीजै ब्यौपार।
जैसे हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार।।

ऊँचे बैठे ना लहैं, गुन बिन बड़पन कोइ ।
बैठो देवल सिखर पर, वायस गरुड़ न होइ ।।

१) कृति पूर्ण कीजिए :

i) पद्यांश में आए दो पक्षियों के नाम _____ _____ 1

ii) कारण लिखिए : सरस्वती के भंडार को अपूर्व कहा गया है : _____ 1

२) उचित मिलान कीजिए: 2

अ	ब
१) करतब	क) मंदिर
२) देवल	ख) चादर
३) काठ	ग) कार्य
४) सौर	घ) लकड़ी

३) ''चादर देखकर ही पैर फैलाना बुद्धिमानी है'' इस विषय पर अपने विचार लिखिए। 2

इ) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'गुरुबानी' कविता का रसास्वादन कीजिए। 6

१) रचनाकार का नाम
२) पसंद की पंक्तियाँ
३) पंक्तियाँ पसंद आने का कारण
४) कविता की केंद्रीय कल्पना

ई) निम्नलिखित प्रश्नों का एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए। (किन्हीं दो) 2

१) गुरू नानक जी की रचनाओं के नाम लिखिए।
२) दोहा छंद की विशेषता लिखिए।
३) त्रिलोचन जी के दो काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।
४) कवि डॉ. जगदीश गुप्त की प्रमुख साहित्यिक कृतियों के नाम लिखिए।

विभाग ३ : विशेष अध्ययन

प्र. ३ अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

सुनो कनु, सुनो
क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए
लीलाभूमि और युद्धक्षेत्र के
अलंघ्य अंतराल में!
अब इन सूने शिखरों, मृत्यु घाटियों में बने
सोने के पतले गुँथे तारोंवाले पुल-सा
निर्जन
निरर्थक
काँपता-सा, यहाँ छूट गया-मेरा यह सेतु जिस्म
- जिसको जाना था वह चला गया
अमंगल छाया
घाट से आते हुए
कदंब के नीचे खड़े कनु को
ध्यानमग्न देवता समझ, प्रणाम करने

जिस राह से तू लौटती थी बावरी
आज उस राह से न लौट
उजड़े हुए कुंज
रौंदी हुई लताएँ
आकाश पर छाई हुई धूल
क्या तुझे यह नहीं बता रही
कि आज उस राह से
कृष्ण की अठारह अक्षौहिणी सेनाएँ
युद्ध में भाग लेने जा रही हैं!

१) उत्तर लिखिए। 2

१) पद्यांश में आई धातु का नाम –
२) पद्यांश में आई संख्या–
३) पद्यांश में उल्लेखित वृक्ष का नाम
४) पद्यांश में आया श्री कृष्ण का संबोधन–

२) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलिए। 2

१) शिखर – _____ २) घाटियाँ – _____ ३) राह – _____ ४) लताएँ – _____

३) स्वमत लिखिए। 2

'युद्ध के दुष्परिणाम' इस विषय पर अपना मंतव्य लिखिए।

आ) निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग ८० से १०० शब्दों में लिखिए। 4

१) राधा की दृष्टि से जीवन की सार्थकता बताइए।
२) 'कवि ने राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को शब्दबद्ध किया है' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।।

विभाग – ४ व्यावहारिक हिंदी, अपठित गद्यांश एवं पारिभाषिक शब्दावली

अ) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग १०० से १२० शब्दों में लिखिए। 6

१) भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम पर फीचर लेखन कीजिए।

अथवा

निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

पल्लवन के लिए भाषा के ज्ञान के अलावा विश्लेषण, संश्लेषण, तार्किक क्षमता के साथ–साथ अभिव्यक्तिगत कौशल की आवश्यकता होती है। इसमें भी आख्याता के प्रत्येक अंश को विषयवस्तु की गरिमा के अनुकूल विस्तारित करना होता है। भाव विस्तार को भी पल्लवन कहा जाता है।

तन्वी : सर जी, क्या पल्लवन में भाव विस्तार के साथ–साथ चिंतन भी होता है?

अध्यापक : अच्छा प्रश्न पूछा तुमने, पल्लवन में भाव विस्तार के साथ चिंतन का स्थान भी महत्त्वपूर्ण होता है। संसार में जितने महान चिंतक, साहित्यिक, विचारक हैं; उनके गहन चिंतन के क्षणों में जिन विचारों और अनुभूतियों का जन्म होता है; उसमें सूत्रात्मकता आ जाती है। सरसरी दृष्टि से पढ़ने पर उसका सामान्य अर्थ ही समझ में आता है, किंतु उसके सम्यक अर्थबोध एवं अर्थ विस्तार को समझने के लिए हमें उसकी गहराई में उतरना पड़ता है। ज्यों–ज्यों हम उस गंभीर भाववाले वाक्यखंड, वाक्य या वाक्य समूह में गोता लगाते हैं, त्यों–त्यों हम उसके मर्मस्पर्शी भावों को समझने लगते हैं। अर्थात छोटे–छोटे वाक्यों या वाक्य खंडों में बंद विचारों को खोल देना, फैला देना,

विस्तृत कर देना ही पल्लवन है।

रोशन : हम जैसे विद्यार्थियों के लिए पल्लवन कला को आत्मसात करने की क्या आवश्यकता है? हम तो साहित्यकार नहीं हैं। इस संदर्भ में जानकारी दीजिए न सर।

अध्यापक : रोशन ! तुम अच्छे-अच्छे प्रश्न करते हो। यह जिज्ञासा सराहनीय है। इसपर चर्चा होनी ही चाहिए।

रोशन: जी सर। हमें इस विषय की भी जानकारी चाहिए।

अध्यापक : वर्तमान युग विज्ञान का युग है। आज के बच्चे वैज्ञानिक युग में पल रहे हैं।हमारे साहित्य में लेखक, विचारक, कवि अपने मौलिक विचारों को व्यक्त करते हैं। हम उनके विचारों को समझ नहीं सकते, तब पल्लवन हमारी सहायता करता है। परंतु बच्चो। केवल विषयगत ज्ञान होना अनिवार्य नहीं होता है अपितु आज के युवाओं के लिए अनेक क्षेत्रों का प्रवेश द्वार तैयार हो जाता है। पल्लवन व्यक्तित्व निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका तैयार कर सकता है।

तन्वी : वह कैसे?

अध्यापक : अब गौर से सुनो, शारीरिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक विकास भी आवश्यक होता है। केवल शिक्षा तथा साहित्य में ही पल्लवन का महत्त्व नहीं है बल्कि उत्कृष्ट वक्ता, पत्रकार, नेता, प्रोफेसर, वकील आदि पद प्राप्त करने के लिए इस कला से अवगत होना आवश्यक है। इतना ही नहीं; कहानी लेखन, संवाद-लेखन, विज्ञापन, समाचार, राजनीति तथा अनेक व्यवसायों में भी पल्लवन का उपयोग होता है। हमारे कैरियर की दृष्टि से भी पल्लवन उपयुक्त है।

१) संजाल पूर्ण कीजिए। **2**

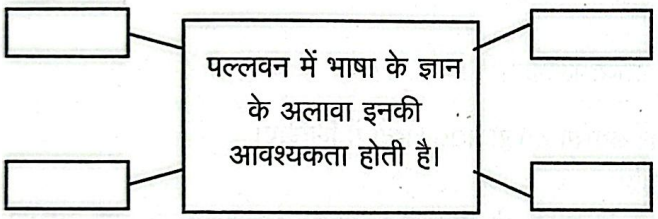

२) परिच्छेद में से शब्दयुग्म ढूँढ़कर लिखिए। **2**

१) _____ २) _____

३) _____ ४) _____

३) स्वमत लिखिए। **2**

'वर्तमान युग विज्ञान का युग है' इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

आ) निम्नलिखित में से किसी एक का ८० से १०० शब्दों में लिखिए। **4**

१) पल्लवन की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

२) फीचर लेखन करते समय बरती जानेवाली सावधानियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१) विषय का _____ शीर्षक फीचर की आत्मा है।

अ) महत्वपूर्ण ब) अर्थपूर्ण क) औचित्यपूर्ण ड) ज्ञानपूर्ण

२) स्नेहा ने _____ के पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश लिया।

अ) चित्रकारिता ब) पत्रकारिता क) संगणक ड) अभिनय

३) विधाता की सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वाधिक गुणसंपन्न कृति _____ है।

अ) मनुष्य ब) पक्षी क) पेड़ ड) पर्वत

४) पल्लवनः विवेक, बुद्धि और ज्ञान मानव की _____ संपदा है।

अ) शारीरिक ब) सामाजिक क) बौद्धिक ड) आर्थिक

इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

''हम रसायनों के युग में रह रहे हैं। हमारे पर्यावरण की सारी वस्तुएँ और हम सब, रासायनिक यौगिकों के बने हुए है। हवा मिट्टी, पानी, खाना, वनस्पति और जीव-जंतु ये सब अजूबे जीवन कौ रासायनिक सच्चाई ने पैदा किए हैं। प्रकृति में सैकड़ों -ड़ों हजारों रासायनिक पदार्थ हैं। रसायन न होते तो धरती पर जीवन भी नहीं होता। पानी, जो जीवन का आधार है, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना एक रासायनिक यौगिक है। मधुर- मीठी चीनी, कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बनी है। कोयला और तेल, बीमारियों से मुक्ति दिलाने वाली औषधियाँ, एंटीबायोटिक्स, एस्प्रीन और पेनिसिलीन, अनाज सब्जियों फल और मेवे-सभी तो रसायन हैं।

जीवन जोखिम से भरा है, गुफामानव ने जब भी आग जलाई, उसने जल जाने का खतरा उठाया। जीवन-यापन के आधुनिक तरीकों के कुछ खतरों को कम किया है, पर कुछ खतरे अनेक गुना बढ़ गए हैं। ये खतरे नुकसान और शारीरिक चोट के रूप में हैं। हम सभी अपने दैनिक जीवन में जोखिम उठाते हैं। जैसे जब हम सड़क पार करते हैं, स्टोव जलातें हैं, कार में बैठते हैं, खेलते हैं, पालतू जानवरों को दुलारते हैं, घरेलू काम-काज करते हैं या केवल पेड़ के नीचे बैठे होते हैं, तो हम जोखिम उठा रहे होते हैं। इन जोखिमों में से कुछ तात्कालिक हैं, जैसे जलने का, गिरने का या अपने ऊपर कुछ गिर जाने का खतरा। कुछ खतरे ऐसे हैं जिनमें प्रभाव लंबे समय के बाद सामने आते हैं ।

१) आकृति पूर्ण कीजिए। 2

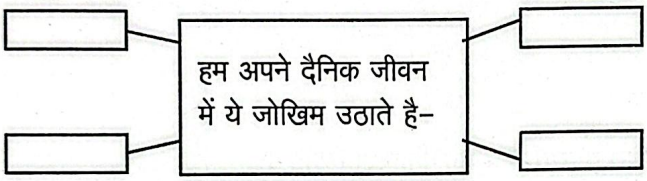

२) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानिए। 2

१) रसायन - _____ २) वस्तु - _____

३) धरती - _____ ४) तेल - _____

३) स्वमत लिखिए। 2

'ध्वनि प्रदूषण' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

ई) निम्नलिखित में से किन्ही चार पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी अर्थ लिखिए। 4

1) JUSTICE	2) PROCEDURE	3) REGISTRATION
4) INTERNAL	5) ANNOUNCER	6) DEDUCTION
7) ELEIGIBILITY	8) WARNING	

विभाग - ५ व्याकरण

कृति ५अ) निम्नलिखित वाक्यों का कोष्ठक में दी गई सूचनाओं के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए (किन्हीं दो): 2

१) एक-एक क्षण आपको भेंट कर देता हूँ। (सामान्य भविष्यकाल में बदलिए)

२) बैजू का लहू सूख गया है। (सामान्य भूतकाल में बदलिए)

३) मन बहुत दुखी हुआ था। (अपूर्ण भूतकाल में बदलिए)

४) मौसी कुछ नहीं बोल रही थी। (अपूर्ण वर्तमान में बदलिए)

आ) निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत अलंकारों के नाम पहचानकर लिखिए। (कोई दो) : **2**

१) सोहत ओढे पीत पट श्याम सलोने गात ।
मनों नीलमनि शैल पर, आतप पर्य्यो प्रभात। ।

२) पीपर पात सरस मन डोला ।

३) चरण-सरोज पखारन लागा ।

४) एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती है
किसी और पर प्रेम पति का, नारियाँ नहीं सह सकती हैं ।।

इ) निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत रस पहचानकर उनके नाम लिखिए (कोई दो) : **2**

१) सुडुक, सुडुक घाव से पिल्लू (मवाद) निकाल रहा है,
नासिका से श्वेत पदार्थ निकाल रहा है।

२) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात ।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सौ बात ।।

३) माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर ।
कर का मनका डारि कै, मन का मनका फेर ।।

४) बिनु-पग चलै, सुनै बिनु काना ।
कर बिनु कर्म करै, विधि नाना ।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वाणी वक्ता, बड़ जोगी ।।

ई) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए। (कोई दो) : **2**

१) आँखें बिछाना

२) मुठ्ठी गर्म करना

३) उल्टी गंगा बहाना

४) चाँदी काटना

उ) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए (कोई दो) : **2**

१) सत्य की मार्ग सरल हैं।

२) वर्तमान युग विग्यान और प्रायोगिकी का युग है ।

३) यह मानव स्वास्थ के लिए हानीकारक होती है ।

४) वह स्वरग का अमरित है ।